Research Article | Economics | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 11 | Issue : 7 | July 2025

# छत्तीसगढ़ के आर्थिक विकास में खनिज संसाधनों की भूमिका

डॉ. श्रीमती अनिता मेश्राम

सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र, मोहन लाल जैन (मोहन भैया) शासकीय महाविद्यालय, खुर्सीपार, भिलाई, दुर्ग (छ.ग)

**प्रस्तावना**

प्राकृतिक संसाधनों में खनिज संपदा का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है किसी भी राष्ट्र राज्य एवं राज्य की समृद्धि में खनिज संसाधनों का महत्वपूर्ण योगदान होता है मनुष्य सभ्यता के प्रारंभ से ही प्राकृतिक संसाधनों द्वारा अपने जीवन को समृद्ध बनाने के प्रयासों में लग रहा है आर्थिक क्षेत्र में खनिज संसाधनों के महत्व की कोई सीमा ही नहीं है खनिज न केवल बड़े पैमाने पर लोगों को रोजगार उपलब्ध कराता है वास्तविक बल्कि राष्ट्रीय आय एवं आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान करता है विदेशी व्यापार में भी खनिज संसाधनों का महत्वपूर्ण योगदान है अतन निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि किसी भी राष्ट्र की समृद्धि बहुत कुछ उसके संसाधनों की उपलब्धता तत्व संबंधित ज्ञान तथा पूर्ण संसाधनों के सदुपयोग पर निर्भर करती है।

आधुनिक भारत के स्थिति पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि भारत के उद्योग एवं कारखाने हैं इसके तीर्थ स्थल एवं मंदिर हैं।

**छत्तीसगढ़ राज्य में खनिज संपदा**

छत्तीसगढ़ राज्य आकर प्रभाव कोष अर्थात खान कोष का स्रोत है कौटिल्य अर्थशास्त्र की यह उद्धव आज आज की परिस्थितियों में भी खनिज संपदा से परिपूर्ण हमारे छत्तीसगढ़ राज्य के लिए प्रासंगिक है आज के औद्योगिक युग में खनिज संसाधनों की उपयोगिता इतनी अधिक है कि कोई भी राष्ट्र इसके बिना अपना आर्थिक विकास नहीं कर सकता छत्तीसगढ़ राज्य खनिज संपदा की दृष्टि से एक संपन्न राज है खनिज खनिज उत्पादन की हैबिट से भारतवर्ष में छत्तीसगढ़ राज्य का द्वितीय स्थान है इस नवजीत राज्य में औद्योगिक महत्व के खनिजों तथा कोयला लोहा बॉक्साइट चूना पत्थर डोलोमाइट तीन अयस्क के अलावा रन सम्राट हीरा भी यहां प्रचुर मात्रा में पाया जाता है इससे इस प्रदेश का 44: से अधिक भाग 1 प्रांत्रों से अच्छा देता है तथा अधिकांश खनिज पदार्थ इन्हीं वन प्रांतरों एवं पहाड़ियों में पाए जाते हैं।

छत्तीसगढ़ राज्य खनिज संपदा की दृष्टि से एवं अग्रणी राज्य है प्रदेश में लगभग 28 विभिन्न प्रकार के खनिज पाए जाते हैं जिनमें बहुमूल्य रत्न भी सम्मिलित है छत्तीसगढ़ पूरे भारतवर्ष में एकमात्र तीन उत्पादक राज्य है तथा इसे विश्व में बेहतरीन लोह अयस्क आधारित राज्य की उपाधि का गौरव भी प्राप्त है।

**अध्ययन का उद्देश्य**

1. छत्तीसगढ़ राज्य के आर्थिक विकास में खनिज संसाधनों का योगदान ज्ञात करना।
2. राज्य में उपलब्ध खनिजों के अन्वेषण एवं विकास को जानना।
3. राज्य में उपलब्ध विभिन्न खनिजों से प्राप्त आय का अध्ययन।

**उपलब्ध शोध साहित्य**

**श्रीवास्तव सूर्यकांत** 1993

बस्तर संभाग की खनिज संपदाओं पर आधारित उद्योगों की आर्थिक संभावनाएं

लेखक ने शोध में बताया है कि बस्तर संभाग प्राकृतिक संपदा से संपन्न एवं आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र है जहां विकास की गति धीमी है बस्तर संभाग में उद्योगों के लिए भरपूर संभावनाएं हैं यहां उद्योगों के आर्थिक विकास के लिए उपयुक्त प्राकृतिक संपदा उपलब्ध है अध्ययन उपरांत सुझाव दिया गया है कि जिले में औद्योगिक विकास से ही वहां रोजगार वह आर्थिक विकास की समस्या हल होगी वास्तव में वनों पर आधारित उद्योगों की स्थापना इस क्षेत्र की गरीबी वह बेकरी को मतकर क्षेत्र को समृद्ध व संपन्नता की ओर ले जाया सकता है।

**दुबे अल्पना** 1996

छत्तीसगढ़ में सीमेंट उद्योग में श्रम कल्याण एवं सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों का तुलनात्मक अध्ययन

लेखक ने अपने शोध में यह परिकल्पना की है कि सीमेंट उद्योग में श्रम कल्याण की स्थिति सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों का तुलना में बेहतर है तकनीकी क्रांति के इस युग में इन उद्योगों को नई ऊंचाइयों तक ले जाए जय सकता है श्रम की विशेष भूमिका रहेगी देखो एवं शासकीय प्रयास से अधिकतम अधिक अधिक रोजगार उत्पन्न कर श्रमिकों के हालात में सुधार किया जा सकता है तकनीकी प्रशिक्षण में यह इंसान हनी को रोका जा सकता है सरकारी नीतियों के सफल क्रयान्वयन के उद्योग के विकास को अपेक्षित गति मिल सकती है

**बेगानी कमल कुमार**

छत्तीसगढ़ का आर्थिक विकास विश्लेषण आत्मक अध्ययन

लेखक के अनुसार आर्थिक दृष्टि से छत्तीसगढ़ में व्यापारिक औद्योगिक आणविक महत्व के खनिज का भंडार है बैलाडीला के उच्च कोटि का लोह अयस्क का जापान में निर्यात हो रहा है अगर उनका उद्योग भारत में किया जाए तो भिलाई जैसे दो बड़े इस्पात और स्थापित किया जा सकते हैं शोध अध्ययन में पाया गया है कि छत्तीसगढ़

का आर्थिक विकास प्रतिवर्ष 10ः से 12ः प्राप्त की जाती है खनिज संसाधनों के व्यवस्थित दोहन से राज्य के विकास में उत्तरोत्तर वृद्धि की जा सकती है।

**पाठक बबीता 2001**
रायपुर संभाग में खनिज आधारित उद्योगों का विकास समस्या एवं संभावनाएं

लेखक ने अपना अध्ययन रायपुर संभाग के खनिज आधारित उद्योगों पर प्रकाश डाला है राजधानी रायपुर के विकास एवं राजधानी के अनुरूप निर्माण कार्यक्रमों के लिए रायपुर के आसपास उद्योगों का एक बड़ा सिलसिला आरंभ होगा जिसमें खनिज आधारित उद्योग शामिल होंगे विकास की समस्या के रूप में स्थान की क्षतिग्रस्त भूमि स्थानीय लोगों का विरोध वन संरक्षण अधिनियम 1980 कोयले की कीमत में नियंत्रण समाप्त कर देने से भिन्न–भिन्न कीमतों पर कोयले की उपलब्धता उभर कर सामने आई उपाय के रूप में बताया गया है कि जहां उत्पादन के मुख्य घटक मौजूद हो उन्हें स्थान पर संयंत्र की स्थापना करनी चाहिए ताकि उत्पादन लागत को काम किया जा सके एवं मांग में वृद्धि का किया जा सके।

**शुक्ल पूर्णिमा 2002**
छत्तीसगढ़ में खनिज संसाधन विकास एवं नियोजन एक भौगोलिक अध्ययन

लेखक ने खनिज संसाधन के विकास एवं नियोजन पर अध्ययन करने पर पाया कि खनिज की प्रचुरता वाले क्षेत्र कम विकसित हैं जबकि संसाधन वाले क्षेत्र विकसित हैं अर्थात खनिजों का क्षेत्रीय उपयोग कम हो रहा है।

**समस्याओं के निम्न सुझाव दिए गएः**
1. प्रदेश को विकसित राज्य की श्रेणी में रखने के लिए राज्य की आधारभूत संरचना को मजबूत किया जाए।
2. राज्य का परिवहन व्यवस्था का विस्तार किया जाए।
3. लोहा स्पंज आयरन एवं ऊर्जा क्षेत्र के अलावा अल्युमिनियम रफ फैक्ट्री कटिंग पॉलिशिंग संयंत्र में भी निवेश किया जाए

**सारस्वत आशा 2002**
छत्तीसगढ़ के खनिज आधारित उद्योगों का विकास एवं संभावनाएं

लेखक के शोध का उद्देश्य यह है कि विकास की प्रक्रिया का तीव्र से संचारक संचालक व विकास योजना बनाने के पूर्व आवश्यक होता है उसे क्षेत्र प्राकृतिक व मानवीय संसाधनों की प्रकृति व गुना का अध्ययन किया जाए प्राकृतिक व मानवीय संसाधनों से परिपूर्ण छत्तीसगढ़ में विकास की अपार संभावनाएं हैं खनिज आधारित उद्योगों का विकास में खनन को मुख्य समस्या के रूप में पाया गया खनिज की कुछ नीतियां व्यवहारिक व आलसी लोचन है जो खनिज उद्योग के विकास के लिए बड़ी समस्या उत्पन्न कर देते हैं नियमों में व्यावहारिक परिवर्तन से विकास में वृद्धि की जा सकती है।

**साहू हेमलता 2005**
रायपुर संभाग के औद्योगिक विकास में जिला उद्योग केदो का योगदान

लेखक द्वारा दुर्ग जिले के विभिन्न खनिज संसाधन उद्योग केदो के योगदान का अध्ययन किया गया यहां उद्योगों के समक्ष निम्न समस्याएं पाई गई–
1. समग्र योजना का अभाव
2. आधारभूत सुविधाओं की कमी
3. तीसरा दोस्त पूर्ण संघटनात्मक संरचना
4. चौथ शासन द्वारा जागरूकता कार्यक्रमों की कमी

**निम्न सुझाव दिए गएः**
1. सुविधाओं तथा कार्यक्रमों का प्रचार प्रसार
2. श्रमिकों के प्रशिक्षण के उचित व्यवस्था
3. ऋण प्रक्रिया का सरलीकरण
4. उद्योगों के लिए वित्त की व्यवस्था करना

**शोध परिकल्पना**
1. छत्तीसगढ़ राज्य खनिज संपदा की दृष्टि से परिपूर्ण एक संपन्न राज्य
2. राज्य के उपलब्ध प्राकृतिक संपदा एवं खनिज संपदा के पर्याप्त दोहन से राज्य के आर्थिक विकास में उत्तरोत्तर वृद्धि की जा सकती है

**अध्ययन विश्लेषण**
छत्तीसगढ़ राज्य खनिज प्रधान राज्य है खनिज का छत्तीसगढ़ राज्य के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान है।

**राज्य में जिलेवार खनिजों की उपलब्धता**

तालिका क. 9.8 छत्तीसगढ़ के प्रमुख खनिज

| क्र. | जिले का नाम | खनिज |
|---|---|---|
| 1 | रायपुर | चूनापत्थर, डोलोमाइट, फास्फोराईट |
| 2 | बलौदाबाजार | चूनापत्थर, डोलोमाइट, स्वर्ण धातु, ग्लूकोनाईट |
| 3 | गरियाबंद | गार्नेट, हीरा, अलेक्जेन्ड्राइट (लौह अयस्क एवं मैगनीज सूक्ष्म मात्रा में उपलब्ध) |
| 4 | दुर्ग | चूनापत्थर, डोलोमाइट |
| 5 | बालोद | लौह अयस्क, फास्फोराईट |
| 6 | बेमेतरा | चूनापत्थर, डोलोमाइट, क्वार्टजाइट (रेड ओकर सूक्ष्म मात्रा में उपलब्ध) |
| 7 | राजनांदगांव | चूनापत्थर, लौह अयस्क, फ्लोराइट, क्ले, क्वार्टज/सिलिका सेन्ड, फास्फोराईट (स्वर्ण, निकल एवं सीसा सूक्ष्म मात्रा में उपलब्ध) |
| 8 | कबीरधाम | बाक्साइट, चूनापत्थर, लौह अयस्क, सोपस्टोन (ओकर सूक्ष्म मात्रा में उपलब्ध) |
| 9 | धमतरी | क्ले एवं अगेट सूक्ष्म मात्रा में उपलब्ध |
| 10 | महासमुन्द | स्वर्ण धातु, क्वार्टजाइट चूनापत्थर, ग्लूकोनाईट (हीरा, निकल, क्रोमियम सीसा एवं फ्लोराइट सूक्ष्म मात्रा में उपलब्ध) |
| 11 | बस्तर | चूनापत्थर, बाक्साइट, डोलोमाइट, लिथियम, निकल, कोमियम |
| 12 | नारायणपुर | लौह अयस्क |
| 13 | कांकेर | लौह अयस्क, बाक्साइट (स्वर्ण एवं क्वार्टज सूक्ष्म मात्रा में उपलब्ध) |
| 14 | कोण्डागांव | बाक्साइट |
| 15 | दंतेवाड़ा | लौह अयस्क, टिन अयस्क (लेपिडोलाइट, गेलेना एवं क्वार्टज सूक्ष्म मात्रा में उपलब्ध) |
| 16 | बीजापुर | कोरण्डम, बाक्साइट (गार्नेट एवं ताम्र अयस्क सूक्ष्म मात्रा में उपलब्ध) |
| 17 | सुकमा | क्वार्टज, चूनापत्थर, कोरण्डम, टिन, लिथियम (गेलेना, ग्रेफाईट सूक्ष्म मात्रा में उपलब्ध) |
| 18 | बिलासपुर | चूनापत्थर, डोलोमाइट, मैगनीज |
| 19 | मुंगेली | चूनापत्थर, क्वार्टजाइट |
| 20 | जंजगीर–चांपा | चूनापत्थर, डोलोमाइट, यूरेनियम |
| 21 | कोरबा | बाक्साइट, कोयला, (लिथियम, माइका, यूरेनियम एवं फायर क्ले सूक्ष्म मात्रा में उपलब्ध) |
| 22 | सरगुजा | बाक्साइट, कोयला (ग्रेफाईट, लेड, माइका एवं चूनापत्थर, यूरेनियम सूक्ष्म मात्रा में उपलब्ध) |
| 23 | सूरजपुर | कोयला (माइका एवं फायर क्ले सूक्ष्म मात्रा में उपलब्ध) |
| 24 | बलरामपुर | कोयला, बाक्साइट, बेसमेटल, मैगनीज (ग्रेफाइट एवं एसबेस्टस सूक्ष्म मात्रा में उपलब्ध) |
| 25 | कोरिया | कोयला |
| 26 | रायगढ़ | कोयला, डोलोमाइट, चूनापत्थर, ग्रेफाईट एवं क्वार्टजाइट |
| 27 | जशपुर | स्वर्ण धातु, बाक्साइट, टंगस्टन (बेरिल एवं गार्नेट सूक्ष्म मात्रा में उपलब्ध) |
| 28 | मनेन्द्रगढ़–चिरमिरी–भरतपुर | कोयला |
| 29 | सांरगढ़–बिलाईगढ़ | डोलोमाइट |
| 30 | मोहला–मानपुर–अंबागढ़ | लौह अयस्क, यूरेनियम, (स्वर्ण सूक्ष्म मात्रा में उपलब्ध) |
| 31 | खैरागढ़–छुईखदान–गंडई | लौह अयस्क |
| 32 | गौरेला–पेण्ड्रा–मरवाही | कोयला |
| 33 | सक्ती | चूनापत्थर, डोलोमाइट |

इस प्रकार इस तालिका से छत्तीसगढ़ राज्य के विभिन्न जिलों में खनिजों की उपलब्धता का विवरण दिया गया है।

**छत्तीसगढ़ राज्य के प्रमुख खनिज भंडार**

| क. | खनिज का नाम | इकाई | देश में कुल भण्डार | छत्तीसगढ़ में कुल भंडार | देश में छ.ग. का प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | कोयला* | मिलियन टन | 352126 | 73424 | 20.85 |
| 2 | लौह अयस्क | मिलियन टन | 24057 | 4592 | 19 |
| 3 | चूनापत्थर | मिलियन टन | 227589 | 11379 | 5 |
| 4 | डोलोमाइट | मिलियन टन | 8415 | 926 | 11 |
| 5 | बाक्साईट | मिलियन टन | 4958 | 992 | 20 |
| 6 | टिन अयस्क | मिलियन टन | 83.72 | 30 | 35.80 |
| 7 | हीरा | मिलियन कैरेट | 31.72 | 1.30 | 4.10 |
| 8 | स्वर्ण | टन | 518.23 | 5.0 | 1 |

स्त्रोत :– **इंडियन मिनरल इयर बुक 2021 (प्रकाशित मार्च 2023) के अनुसार**

***01.04.2021 की स्थिति में भण्डार एवं संसाधन सहित (जीएसआई)**

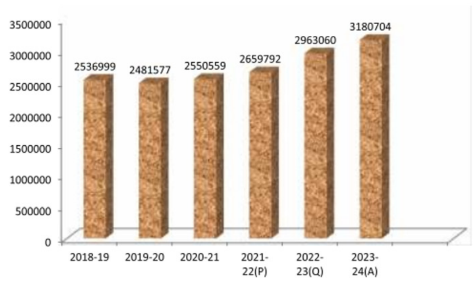
उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है की सर्वाधिक खनिज टिन 35.80 प्रतिशत का योगदान भारत वर्ष में है छत्तीसगढ़ राज्य को सर्वाधिक टिन उत्पादक राज्य माना है।

छत्तीसगढ़ राज्य में खनिज तथा उत्खनन क्षेत्र का सकल राज्य घरेलू उत्पाद में भागीदारी का विवरण (स्थिर भाव 2011– 12)

**तालिकाः सकल घरेलू उत्पाद में खनन एवं उत्खनन क्षेत्र की भागीदारी**

| तालिका 9.2 खनन तथा उत्खनन क्षेत्र का सकल राज्य घरेलू उत्पाद में भागीदारी का विवरण (स्थिर भाव 2011–12) | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| **सांख्यिकी** | 2018-19 | 2019-20 | 2020-21 | 2021-22(P) | 2022-23(Q) | 2023-24(A) |
| भागीदारी (लाख) | 2536999 | 2481577 | 2550559 | 2659792 | 2963060 | 3180704 |
| वृद्धि (प्रतिशत) | 7.96 | -2.18 | 2.78 | 4.28 | 11.40 | 7.35 |
| हिस्सा (प्रतिशत) | 11.38 | 10.54 | 10.72 | 10.00 | 10.37 | 10.52 |

**खनन तथा उत्खनन क्षेत्र का सकल राज्य घरेलू उत्पाद में भागीदारी का विवरण (स्थिर भाव 2011–12)**




उपरोक्त तालिका को देखने से स्पष्ट है कि छत्तीसगढ़ उत्खनन क्षेत्र में उत्पादन में वृद्धि की अगर हम बात करें तो सर्वाधिक वृद्धि का प्रतिशत वर्ष 2022–23 में रहा जो की 11: पर सबसे कम उत्पादन का वर्ष 2019 20 रहा जो की ऋण आत्मक 2.8 प्रतिशत रहा इस तालिका को हमने मानचित्र के माध्यम से प्रयास किया है उपरोक्त मानचित्र में वर्षवर में उत्खनन एवं खनन की भागीदारी को दर्शाया गया है 19 में जीडीपी में भागीदारी 25 36 999 लख रुपए का था जो 2019–20 में घर घट गया और 24 8 15 770 करोड रुपए पुणे करोड़ों कल लॉकडाउन में कोरोना कल लॉकडाउन को कोविद है फिर 2021–22 पुणे 2550559 लाख रुपए हो गया जो क्रमशः बढ़ते बढ़ते 2023–24 में 3180704 लाख रुपए हो गया अतः जीडीपी में योगदान बढ़ रहा है।

**छत्तीसगढ़ राज्य में खनिज उत्पादन से राजस्व आय (करोड़) में**
छत्तीसगढ़ की धरती औद्योगिक खनिजों से परिपूर्ण है खनिजों की गुणवत्ता तथा इसके भंडार औद्योगिक उद्यमियों को प्रदेश में उद्योग लगाने हेतु आकर्षित करते हैं

**तलिकः राजस्व आय (करोड़) में**

| वर्ष | छत्तीसगढ़ | भारत | योगदान का % |
|---|---|---|---|
| 2013–14 | 19566 | 225660 | 8.7 |
| 2014–15 | 19416 | 236554 | 8.2 |
| 2015–16 | 19213 | 234171 | 8.2 |
| 2016–17 | 22743 | 237730 | 9.6 |
| 2017–18 | 9184 | 58638 | 15.66 |
| 2018–19 | 11076 | 73257 | 15.12 |
| 2019–20 | 10001 | 69901 | 14.31 |
| 2020–21 | 11941 | 67814 | 17.60 |
| 2021–22 | 23023 | 132747.6 | 17.34 |
| 2022–23 (अप्रैल 22 –जन.23) | 14046 | 93205 | 15.07 |
| **स्त्रोत–भारतीय खान ब्यूरो प्रकाशन** | | | |

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि छत्तीसगढ़ में खनिज से प्राप्त राजस्व के 8 वर्षों का अध्ययन करने से ज्ञात हो रहा है कि 2015–16 में राजस्व आय 3709.57 करोड रुपए था जो की 2022–23 में बढ़कर 12 941. 33 करोड रुपए हो गया है अर्थात 8 वर्षों में चार गुना राजस्व आय में वृद्धि हो गई है जो कि छत्तीसगढ़ राज्य के विकास समृद्धि में महत्वपूर्ण है

## निष्कर्ष

उपरोक्त तालिकाओं के आंकड़ों का विश्लेषण करने से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि छत्तीसगढ़ के प्रमुख खनिजों के उत्पादन में निरंतर वृद्धि हो रही है वही सब उसे प्राप्त होने वाले राजस्व आय में भी निरंतर वृद्धि हो रही है छत्तीसगढ़ राज्य के लगभग 27 प्रतिशत राजस्व खनिजों से प्राप्त हो रहा है छत्तीसगढ़ में कुल 28 प्रकार के खनिज उपलब्ध हैं अधिक राजस्व की प्राप्ति कोयला एवं लोह अयस्क से होता है संपूर्ण भारत में तीन उत्पादन में छत्तीसगढ़ राज्य का पहला स्थान है एवं एकमात्र उत्पादन 216 है 100: टिन का उत्पादन होता है छत्तीसगढ़ में खनिजों से अनेक उद्योग कारखाने स्थापित हुए हैं भिलाई स्टील प्लांट इसका प्रमुख उदाहरण है इससे लोगों को रोजगार प्राप्त हुआ है अतः हम कर सकते हैं कि छत्तीसगढ़ के आर्थिक विकास में खनिज संसाधनों की अहम भूमिका निभा रही है।

## सुझाव

खनिज संसाधन से संबंधित सुझाव निम्नलिखित हैः

1. छत्तीसगढ़ में खनिज का उचित विदोहन करने के लिए उचित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए वैज्ञानिक तकनीक खनन करने से उत्पादन एवं विदोहन उचित ढंग से होने कारण लोगों को रोजगार की प्राप्ति होती है।

2. छत्तीसगढ़ में प्राप्त प्राकृतिक संसाधनों का आर्थिक विकास उचित प्रयोग किया जाना चाहिए।
3. खनिज्य राष्ट्रीय खनिज राजस्व खनिज आई नीति जो वर्तमान कंपनी व राज्य सरकार को प्राप्त होती है उसमें उचित समन्वय होना चाहिए।
4. आधुनिकतम लघु एवं कुटीर उद्योग को प्रोत्साहन बढ़ावा देना चाहिए
5. नई खनिज नीति का निर्माण किया जाना चाहिए।

**संदर्भ**


1. डॉ. मनोरी सिया चतुर्भुज औद्योगिक अर्थव्यवस्था
2. आर्थिक सर्वेक्षण वर्ष 2016–17 एवं सांख्यिकी संरचनालय
3. चौरसिया आर ए 2007 प्राकृतिक संसाधन
4. अग्रवाल आरसी व्यवसाय प्रशासन एवं प्रबंध
5. भारत शासन नई दिल्ली भारत की खनिज संपदा
6. भंडारी डॉक्टर बी एस विपणन प्रबंधन
7. दुबे आर एन एवं सिन्हा बी आर्थिक विकास एवं नियोजन